शोध और नैतिकता का अंतर्संबंध

डॉ. सुषमा देवी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

बद्रुका कॉलेज , काचीगुडा, हैदराबाद

शोध सार :

सृष्टि के अनसुलझे बिंदुओं को सुलझाने के लिए मानव के द्वारा किए जाने वाले प्रयत्नों का नाम शोध होता है | इस कार्य में प्रवृत्त मानव की खोजी दृष्टि जब गंभीरतापूर्वक प्रवृत्त होती है, तो शोध के कपाट खुलने लगते हैं | मानव जिज्ञासा की प्रवृत्ति ने उन्हें सतत जिज्ञासु बनाए रखा है | मनुष्य की शोध दृष्टि आरंभ में अपने जीवन की मूलभूत सुविधाओं को प्राप्त करने पर ही केंद्रित रही | नित नए अविष्कारों की भूमिका ने शोध के व्यापक धरातल को दृढ़ता प्रदान की | शोध में नैतिकता का पक्ष जितना सबल रहेगा, उसके परिणाम उतने ही उदात्त होंगे |

बीज शब्द : गवेषणा, अन्वेषण, सृजनात्मक, जीवन मूल्य, मानवता, जिज्ञासा, तथ्यपरकता, आदि |

'शोध' शब्द को कई अन्य नाम से भी जाना जाता है, यथा; शोध, गवेषणा, अन्वेषण, अनुसंधान, मीमांसा, सर्वेक्षण, आलोचना तथा अनुशीलन आदि | ''अनुसंधान' शब्द में 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'धा' (धारण करना, रखना) धातु से बना है | अनु का अर्थ है पीछे लगना, अनुसरण करना या पुनः करना और संधान का अर्थ है निशाना लगाना, लक्ष्य लगाना, या निश्चित करना | अतः अनुसंधान शब्द का पुर्णार्थ हुआ पूर्ण एकाग्रता एवं धैर्यपूर्ण अनवरत परिश्रम से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना और लक्ष्य प्राप्ति पर्यंत निरंतर बढ़ना |'1

जब एक शोधार्थी लक्ष्य को मस्तिष्क में रखकर अनुसंधान करता है, तो लक्ष्य अवश्य प्राप्त होता है | मानव बुद्धि-भाव में सम्मिलन होने से ही साहित्य का अजस्र द्वार खुलता है | साहित्य में शोध का आरंभ करने से पूर्व एक शोधार्थी में कठिन परिश्रम के लिए कमर कसते हुए जिज्ञासु वृत्ति तथा धैर्य के साथ तटस्थता पूर्वक प्रवृत्त होकर अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करने का गुण अवश्य होना चाहिए | अनुसंधानकर्ता अपने समाज में व्याप्त अशांति और असुरक्षा तथा कलुष को दूर करने का प्रयास करते हुए मूल जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न करते हैं | अनुसंधान में सत्य की खोज

शिवत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है और जब लक्षित लक्ष्य की प्राप्ति होती है तो शिवत्व छा जाता है| शिवत्व का अर्थ ही है मानवता को गरल से तथा बुरे विचारों से बचाना | इसीलिए शोध का नैतिकता से गहरा संबंध होता है | शिवदान सिंह चौहान के शब्दों में – 'वर्ग, समाज, देश और काल के भेद से जीवन मूल्यों का यह पैटर्न बदलता जरूर है लेकिन इस परिवर्तन का आधार ऐतिहासिक है, व्यक्तिगत रुचि नहीं | इसीलिए ऐतिहासिक चेतना के संदर्भ में हम विभिन्न जीवन मूल्यों के विकास में एक तारतम्य और संबंध स्थापित कर सकते हैं|'2

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंस में शोध को इन शब्दों में विवेचित किया गया है- शोध का प्रमुख कार्य वस्तुओं का संयोजन तथ्यों का सामान्यीकरण तथा संकल्पनाओं का विस्तार करना है| इसके साथ ही उसका यह कार्य भी है कि वह ज्ञान का संशोधन तथा सत्यापन करें|

'अनुसंधान' को परिभाषित करते हुए डॉ नगेंद्र ने लिखा है – 'अनुसंधान का अर्थ है परिपृच्छा , परीक्षण, समीक्षण आदि | संधान का अर्थ है दिशा विशेष में प्रवृत्त करना या होना अनु का अर्थ है पीछे, इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ- किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना- पश्चाद्गमन अर्थात किसी तथ्य की प्राप्ति के लिए परिपृच्छा, परीक्षण आदि करना|'3

वर्त्तमान समय में शोध कार्य हर क्षेत्र में हो रहे हैं, किंतु शोध में नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है| जब साहित्य क्षेत्र में शोध की बात की जाती है तो वहां भी इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि कहीं शोधार्थी के शोध कार्य से किसी का अहित न हो | रचनाकार की रचनाओं को पूर्ण नैतिकतापरक परख की आवश्यकता होती है | शोध के संसाधनों को एकत्र करने से लेकर एक शोधार्थी को दृष्ट सत्य के तथ्य के आधार पर उसके अज्ञात पक्ष से साक्षात्कार कराना होता है | प्रायः अनुसंधान एवं आलोचना में साम्यता होने के कारण दोनों को एक ही मान लिया जाता है, लेकिन एक शोधार्थी को इन दोनों में अंतर को समझते हुए शोध कार्य में आगे बढ़ना चाहिए | क्योंकि जहां शोध का कार्य साहित्यिक स्तर पर तथ्यात्मकता को प्रमुखता देना होता है, वहीं आलोचना में साहित्यिक सौंदर्य का परिमार्जन किया जाता है | डॉ उदय भानु सिंह ने इस अंतर को इन शब्दों में समझाने की कोशिश की है- 'अनुसंधान स्वरूपतः विज्ञान प्रधान है, बुद्धि प्रधान है, चिंतन से ओतप्रोत है | उसकी संपूर्ण प्रविधि प्रक्रिया वैज्ञानिक है | आलोचना स्वरूपतः कलाप्रधान होती है | अपने प्रयोजन के अनुरूप ही आलोचना भावप्रयोग प्रधान होती है | अनुसंधान ज्ञानयोग प्रधान होता है|'4

साहित्य में तुलना करते हुए शोधरत होता है तो उन्हें तुलनात्मक दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक हो जाता है | ऐसे शोध कार्य में प्रवृत्त शोधार्थी को दोनों भाषा साहित्य के साथ तटस्थ व्यवहार अपनाना होता है | जब किसी बिखरे हुए विषय को संस्कृति, क्षेत्रीयता, लोकजीवन तथा तथ्यों के आधार पर संग्रह किया जाता है, तो ऐसे शोध को सर्वेक्षणपरक शोध माना जाता है |

विविध भाषाओं के साहित्य एवं बोलियों, साहित्य समाज को इस पद्धति को अपनाकर ही शोध किया जाता है | ऐतिहासिक तथ्यों को किसी युगगत सीमा रेखा के आधार पर विभाजित करते हुए ऐतिहासिक शोध कार्य किया जाता है | हिंदी साहित्य के विविध कालों का विभाजन इसी पद्धति के आधार पर किया गया है | वर्गपरक तथा पाठ-निर्धारण पद्धति आदि शोध के साथ ही भाषा वैज्ञानिक शोध पद्धतियों आदि को शोधार्थी अपनाते हुए निष्पक्ष रुप से बिना किसी पूर्वाग्रह के शोध करते हुए निष्कर्ष के स्तर पर पहुंचते हैं | वर्गपरक पद्धति के द्वारा शोधार्थी विविध समानताओं तथा विषमताओं का विस्तृत स्वरूप ग्रहण करते हुए शोधरत होता है |

जब साहित्य, दर्शन आदि के क्षेत्र में शोध कार्य किए जाते हैं, तो शोधार्थी को शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण करना होता है ताकि शोध में गुणवत्ता के स्तर को स्थिर किया जा सके | पाठ-निर्धारण तथा अर्थ-निर्धारण पद्धति के अंतर्गत भाषा विज्ञान के सम्यक अनुशीलन का तथा तथा उसकी प्रमाणिकता का विशेष ध्यान रखा जाता है | भाषा वैज्ञानिक पद्धति में गूढ़ता के साथ ही भारत में शोध के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में स्वतंत्र शाखा की स्थापना की जाने लगी है | शोधार्थी तथा शोध निर्देशक को विषय विशेष के क्षेत्र में विशुद्ध ज्ञान का होना अपरिहार्य है | शोध में नैतिकता का पक्ष जितना प्रबल होता है, शोध कार्य की स्थापनाएं उतनी ही सत्य के निकट होती है | अनुसंधानकर्ता से पूर्व निर्देशक में अनुसंधान दृष्टि का प्राबल्य होना आवश्यक है | शोध के विषय निर्धारण करने के पश्चात पूर्व एवं वर्तमान की घटनाओं के निर्धारण के लिए घटनाओं का सम्यक विवेचन करना अत्यंत आवश्यक होता है | शोध के सामग्री संकलन में सत्य और तथ्य के नैतिक पहलुओं को महत्व देना आवश्यक है | इन्हीं मंतव्यों को निम्न वाक्यों में R.M, Hutchins ने स्पष्ट किया है – 'Research in the sense of gathering data for the sake of gathering has no place in a University. Research in the sense of development, alaboration and refinement of principles. together with the collection and use of empirical material, is one of the highest activity of the universities.5

अनुसंधाता में शोध विषय के प्रति जितनी उत्कंठा होगी, उसकी रूचि के परिमार्जन का स्तर भी उतना ही उच्चस्तरीय होगा | उसे अपने विषय में सत्य निष्ठापूर्वक तर्कशीलता के साथ

अग्रसर होते हुए शोध हेतु चयनित विषय से संबंध ग्राह्यता को धारण करना होगा | एक शोधार्थी के मन-मस्तिष्क में उठने वाले प्रश्नों के प्रति निर्देशक का सकारात्मक सुझाव शोध कार्य में गतिशीलता का कारक बनता है |

शोध समाहार :

इस प्रकार हम देखते हैं कि शोध में सत्य, नैतिकता, तथ्यपरकता और अनुपमेयता का बहुत बड़ा योगदान होता है | शोध में जब तक तथ्यपरक और सत्य के नैतिक मार्ग से सामग्री संकलन नहीं होता, तब तक उसकी स्थापनाएं नवीन नहीं कही जा सकती है | शोध में रचनाकार की भाषा को तद्युगीन शैली, प्रचलन के आधार पर समझते हुए पूरी निष्ठा के साथ शोधार्थी को अपने कार्य के साथ न्याय करना आवश्यक है | शोध में नैतिक पक्ष को सबसे अधिक महत्त्व देने पर ही शोध की सिध्दि संभव है |

संदर्भ सूची:

1. डॉ रवीन्द्र कुमार जैन , साहित्यिक अनुसंधान के आयाम, पृष्ठ; 3

2.शिवदान सिंह चौहान ,आलोचना के सिद्धांत, पृष्ठ; 153

3. डॉ. नगेंद्र, आस्था के चरण, पृष्ठ; 49

4. डॉ उदय भानु सिंह , अनुसंधान का विवेचन, पृष्ठ; 25-26

5. R.M, Hutchins , रिसर्च इन लिटरेचर, पृष्ठ; 60)

डॉ .सुषमा देवी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

बद्रुका कॉलेज , काचीगुडा, हैदराबाद